विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 3 | अंक : 9 | मार्च, 2010

विश्व हिंदी दिवस समारोह

हिंदी की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है

माननीय डॉ. मनमोहन सिंह

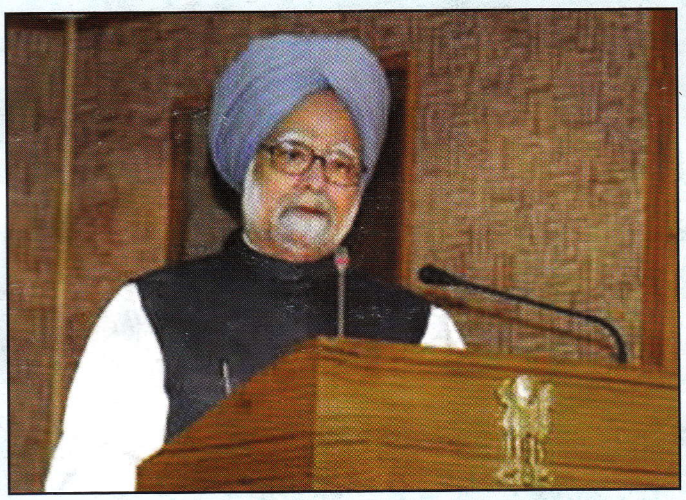

भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह

माननीय डॉ. मनमोहन सिंह का संदेश

भारत के प्रधानमंत्री माननीय डॉ. मनमोहन सिंह जी का विश्व हिंदी दिवस पर जारी संदेश जिसे मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी ने विश्व हिंदी दिवस : 2010 के समारोह में पढ़कर सुनाया :

"मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 10 जनवरी का दिन विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। वैश्विक मंच पर हिंदी को लोकप्रिय बनाने का यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

विगत कुछ वर्षों से वैश्विक मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने में भारत सफल हो रहा है। इससे विश्व भर में हिंदी भाषा की लोकप्रियता और महत्व भी बढ़ा है। हिंदी भाषा को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए हमें सक्रिय प्रयास करने होंगे। विदेशों में बसे भारतीय और विदेश स्थित हमारे मिशन हिंदी को एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने में अपना पूरा सहयोग दे रहे हैं। इनके सहयोग से निश्चित ही लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।" ..

> हिंदी कोई जड़ भाषा नहीं है, गतिशील भाषा है; उसने हज़ारों आयातित और नए शब्द अपनाए हैं। पिछले दिनों तैयार कोशों में हिंदी में हज़ारों शब्द जुड़ गए हैं। इसलिए भाषाई आवक के लिए हिंदी का द्वार सदा खुला रहता है; तभी वह इतनी समृद्ध हुई है।
>
> **डॉ.प्रभाकर श्रोत्रिय**

भाषा और संस्कृति में है सच्चा सुख

-राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरूद्ध जगन्नाथ

मॉरीशस के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरूद्ध जगन्नाथ

विश्व हिंदी सचिवालय, शिक्षा-संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्रालय, भारतीय उच्चायोग : मॉरीशस, इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र और हिंदी संगठन के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन 10 जनवरी, 2010 को मॉरीशस के इंदिरा गाँधी सांस्कृतिक केंद्र के भव्य सभागार में किया गया। भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति , मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्रालय के कार्यवाहक मंत्री माननीय श्री राजेश्वर जीता, हंगरी से आमंत्रित मुख्य वक्ता डॉ. मारिया न्यजैशी एवं विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद (गवर्निंग काउन्सिल) के सदस्य श्री अजामिल माताबदल, श्री सत्यदेव टेंगर की उपस्थिति में आयोजित इस भव्य समारोह के मुख्य अतिथि थे मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरूद्ध जगन्नाथ। गणराज्य की प्रथम महिला श्रीमती सरोजनी जगन्नाथ ने भी अपनी उपस्थिति से समारोह को गरिमा प्रदान की।

सचिवालय की महासचिव डॉ.(श्रीमती) विनोदबाला अरुण के स्वागत भाषण के बाद महात्मा गाँधी संस्थान, मोका की प्राध्यापिका श्रीमती वर्षा रानी बिसेसर दुलुआ ने डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी की कविता ' हिंदी हम सबकी परिभाषा ' का सस्वर पाठ किया। कविता पाठ के बाद हिंदी संगठन के प्रधान श्री अजामिल माताबदल ने मॉरीशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध हिंदी संगठन की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला।

विश्व हिंदी दिवस समारोह के लिए मुख्य वक्ता के रूप में इत्वोस

विश्व हिंदी दिवस समारोह
भाषा और संस्कृति में है सच्चा सुख

मुख्य वक्ता डॉ. मारिया न्यजैशी

लोरांद विश्वविद्यालय, बुदापैश्त, हंगरी के भारत विद्या अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मारिया न्यजैशी को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि बुदापैश्त में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के दो ही केंद्र हैं : इत्वोस लोरांद विश्वविद्यालय का भारोपीय अध्ययन विभाग तथा भारतीय राजदूतावास और इसी विभाग द्वारा आयोजित हिंदी कोर्स। सन् 1635 में स्थापित इत्वोस लोरांद विश्वविद्यालय के दर्शन संकाय के अंतर्गत सन् 1873 में 'भारोपीय अध्ययन विभाग ' की स्थापना की गई थी। इसका उद्देश्य भारोपीय तुलनात्मक भाषाविज्ञान का अध्ययन करना था। इसी विभाग में सन् 1956 में भारतविद्या अध्ययन एक प्रमुख विषय के रूप में शामिल किया गया।

मार्च, 2002 में हंगरी में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। उसके बाद वर्ष 2007 में भी हिंदी अध्ययन-अध्यापन के विषय में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था। अंतर्राष्ट्रीय भाषाएँ एकाधिक राष्ट्र के विभिन्न भाषा-भाषियों में परस्पर संपर्क तथा वैचारिक आदान-प्रदान का आधार होती हैं।

मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने के लिए 'विश्व हिंदी दिवस' का आयोजन एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है । भारत सरकार हिंदी के संवर्धन को अत्यंत महत्व देती है तथा इसके उत्तरोत्तर विकास के लिए प्रतिबद्ध है । इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार ने विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया है । प्रथम सम्मेलन 1975 में नागपुर में तथा आठवाँ सम्मेलन 2007 में न्यूयॉर्क में आयोजित किया गया । इन सम्मेलनों ने इस विश्वास को पुष्ट किया है कि हिंदी केवल अधिकांश प्रवासी भारतीयों द्वारा ही नहीं बोली जाती है, अपितु बहुत से अन्य लोग भी हिंदी बोलते-लिखते हैं और इसके प्रशंसक हैं।

विश्व स्तर पर हिंदी का प्रचार -प्रसार भारत सरकार की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है । अपनी इस नीति के अंतर्गत सभी भारतीय मिशनों एवं दूतावासों से कहा गया है कि वे हिंदी का अधिक प्रयोग करें तथा इसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दें । इसके अलावा, सन् 2006 से प्रति वर्ष 10 जनवरी का दिन विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । इस अवसर पर हिंदी के अनेक कार्यक्रम और प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं ।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय डॉ.मनमोहन सिंह जी ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर समस्त विश्व को अपनी शुभकामनाएँ और संदेश दिया है। प्रधानमंत्री जी का संदेश मैं आपको पढ़कर सुनाता हूँ। (**महामहिम द्वारा पढ़ा गया प्रधानमंत्री जी का संदेश प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित है**)।

भारतीय उच्चायोग द्वारा इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में मॉरीशस के निवासियों के लिए ' हिंदी कविता प्रतियोगिता ' का आयोजन किया गया, जिसमें मॉरीशस के कवियों ने बढ़ - चढ़कर हिस्सा लिया । मैं हिंदी कविता प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी कवियों को उनकी सहभागिता के लिए धन्यवाद देता हूँ तथा इस प्रतियोगिता के विजेताओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ ।

आज के इस अवसर पर हंगरी से आयी डॉ. मारिया न्यजैशी हमारे बीच हैं । हम उनका स्वागत करते हैं । उनकी यह उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि हिंदी वैश्विक भाषा है । विश्व भर में अनेक हिंदी सेवी और हिंदी प्रेमी हिंदी के विकास और प्रसार में लगे हैं ।

आज का यह दिन विश्व हिंदी सचिवालय के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है क्योंकि आज विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक पत्रिका के प्रथम अंक का लोकार्पण महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा किया जाएगा ।

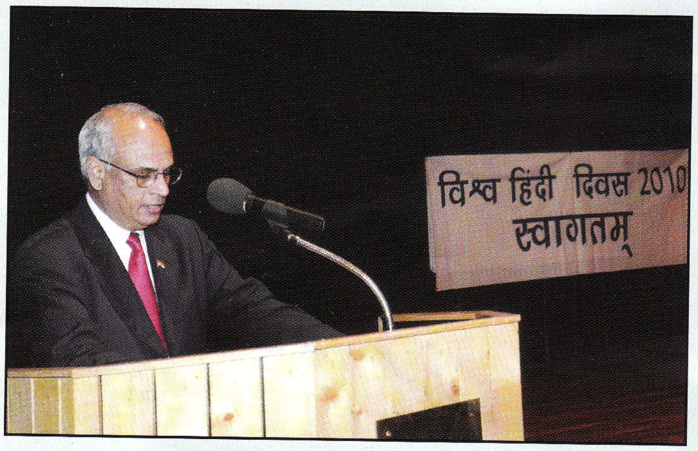

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति

मैं विश्व हिंदी पत्रिका के प्रकाशन के लिए सचिवालय की महासचिव डॉ. विनोद बाला अरुण और उप महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र को बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि यह पत्रिका विश्व हिंदी सचिवालय के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने में एक महत्त्वपूर्ण माध्यम सिद्ध होगी ।

विश्व भर में फैला विशाल हिंदी-भाषी और हिंदी-प्रेमी समुदाय हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित देखना चाहता है और चाहता है कि हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की एक राजभाषा बने । यह सब हम सबके सामूहिक और गहन प्रयासों से ही संभव हो सकेगा । आज का समय सूचना प्रौद्योगिकी का समय है । सूचना और संचार

मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति व मानव संसाधन मंत्रालय के कार्यवाहक मंत्री श्री राजेश्वर जीता

संसाधनों में हिंदी का जितना अधिक प्रयोग बढ़ेगा, विश्व स्तर पर उतनी ही तेजी से तथा व्यापक स्तर पर हिंदी का विकास और प्रसार होगा ।

विज्ञान, तकनीकी, संचार और सूचना प्रौद्योगीकी का उपयोग करते हुए यदि हिंदी को इस क्षेत्र में गति दी जाएगी तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी विश्व मंच पर सर्वाधिक प्रतिष्ठित भाषा बनकर उभरेगी तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं राजभाषा भी अवश्य बनेगी ।

मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति व मानव संसाधन मंत्रालय के कार्यवाहक मंत्री माननीय श्री राजेश्वर जीता ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि आज मैं महामहिम राष्ट्रपति जी और आप सबके साथ मिलकर ' विश्व हिंदी दिवस ' पहली बार मना रहा हूँ। आज यहाँ आकर 'विश्व हिंदी दिवस ' के बारे में मुझसे पहले बोलनेवाले वक्ताओं से मुझे ढेर सारी जानकारी मिली। भारत के माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का संदेश भी सुनने को मिला। उससे भी बहुत सी बातों का पता चला। सचमुच यहाँ आकर मुझे बहुत अच्छा लगा।

मुझे विश्वास है कि धीरे-धीरे 'विश्व हिंदी दिवस ' की जानकारी पूरे विश्व में फैलेगी और न केवल भारत एवं मॉरीशस में, बल्कि विश्व के कोने कोने में 10 जनवरी का दिन 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में खूब धूम-धाम से मनाया जाएगा। 'विश्व हिंदी दिवस' के अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरूद्ध जगन्नाथ ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारकर हिंदी प्रेमियों का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि अपने लंबे राजनीतिक अनुभव से मैंने यह सीखा है कि गरीबी सबसे बड़ा दुख है। इसलिए हमें आर्थिक उन्नति करने के लिए सदा प्रयत्न करना चाहिए। लेकिन साथ में यह भी सोचना चाहिए कि केवल धन से ही सुख नहीं मिलता है। सच्चा सुख पाने के लिए हमें अपनी भाषा और संस्कृति पर पूरा ध्यान देना चाहिए। जो समाज अपनी भाषा और संस्कृति को खो देता है, वह भौतिक रूप से धनी होकर भी आत्मा से गरीब हो जाता है।

मॉरीशस में हमारे पूर्वजों ने भाषा और संस्कृति की रक्षा करके ही अपनी पहचान को बचाया था। आज़ादी के संघर्ष में भी हमारे नेताओं ने हिंदी का उपयोग किया था। आज आज़ादी के बाद भी हम हिंदी की प्रगति के लिए काम कर रहे हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हिंदी का प्रचार विश्व स्तर पर करने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मॉरीशस में हुई है। इससे पता चलता है कि मॉरीशस के दिल में हिंदी के लिए कितना गहरा प्रेम है। सन् 1975 में आज के दिन भारत के नागपुर शहर में हिंदी के विश्व रूप का दर्शन ' प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन ' में किया गया था। भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने अपनी उपस्थिति से इस सम्मेलन को ऐतिहासिक गौरव प्रदान किया था। अब तक कुल आठ विश्व हिंदी सम्मेलन हो चुके हैं जिनमें दो 1976 और 1993 में मॉरीशस में हुए हैं। 1993 का सम्मेलन जब हुआ तब मैं प्रधानमंत्री था।

हिंदी बोलना कठिन नहीं है। हमने हंगरी से आई प्रो. मारिया जी को सुना । उनकी हिंदी से हम सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर मैं भारत सरकार और भारतीय उच्चायोग के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिससे हिंदी के काम को सदैव सहायता मिलती है। मैं भारतीय उच्चायुक्त श्री गणपति जी का अभिनंदन करता हूँ।

विश्व हिंदी पत्रिका' के लोकार्पण अवसर पर उपस्थित माननीय अतिथिगण

अंत में उन्होंने विश्व हिंदी दिवस, नववर्ष और संक्रांति की बधाई दी। महामहिम राष्ट्रपति जी ने सचिवालय द्वारा प्रकाशित 'विश्व हिंदी पत्रिका' के प्रथम अंक का लोकार्पण भी किया।

इस अवसर पर भारतीय उच्चायोग द्वारा मॉरीशस निवासियों के लिए आयोजित ' हिंदी कविता प्रतियोगिता ' के प्रथम पुरस्कार विजेता श्री गुलशन सुखलाल, द्वितीय पुरस्कार विजेता श्रीमती राधा माथुर एवं तृतीय पुरस्कार विजेता श्रीमती कल्पना लालजी ने अपनी-अपनी पुरस्कृत-कविता का पाठ किया। समारोह में सभी पुरस्कार विजेताओं को नक़द पुरस्कार भी प्रदान किए गए ।

संस्कृति प्रभाग की वरिष्ठ संस्कृति अधिकारी सुश्री अनुपमा चमन ने मुख्य अतिथि महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ, श्रीमती सरोजनी जगन्नाथ, भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति, मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्रालय के कार्यवाहक मंत्री माननीय श्री राजेश्वर जीता, हंगरी से आमंत्रित मुख्य वक्ता डॉ. मारिया न्यजैसी, विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के माननीय सदस्य श्री अजामिल माताबदल और श्री सत्यदेव टेंगर, इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक श्रीमती अनिता अरोड़ा, एम.बी.सी. और प्रेस एवं सभी उपस्थित श्रोताओं को हार्दिक धन्यवाद दिया ।

समारोह का संचालन डॉ. जय प्रकाश कर्दम और डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने किया ।..

विश्व हिंदी सचिवालय में श्रीमती मीरा कुमार का भव्य स्वागत

चित्र में बाएँ से दाएँ : माननीया श्रीमती मीरा कुमार, डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, महामहिम श्री मधुसूदन गणपति एवं श्री के.सामलाल

लोकसभा अध्यक्ष माननीया श्रीमती मीरा कुमार के नेतृत्व में 17-22 जनवरी, 2010 तक भारतीय संसद के शिष्टमंडल का मॉरीशस आगमन हुआ । अपने अन्य व्यस्त कार्यक्रमों के साथ ही विश्व हिंदी सचिवालय पधारने पर शिष्टमंडल का भव्य स्वागत किया गया । शिष्टमंडल में माननीया मीरा कुमार जी के साथ माननीय डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह, श्रीमती रमा देवी, श्री शिवानंद तिवारी, डॉ. महेश जोशी आदि गणमान्य सांसद एवं लोकसभा के महासचिव श्री पी.डी.पी.अचारी, संयुक्त सचिव (शिष्टमंडल के सचिव) श्री अमिताभ मुखोपाध्याय, निदेशक (राज्यसभा सचिवालय) श्री दीपक गोयल, अपर निदेशक (लोकसभा सचिवालय) तथा अन्य अधिकारीगण शामिल थे । भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति, उप उच्चायुक्त श्री प्रशांत पिसे, द्वितीय सचिव सुश्री सुजा मेनन और श्री रोहित रतीश तथा मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति व मानव संसाधन मंत्रालय के प्रधान सहायक सचिव श्री के.सामलाल भी शिष्टमंडल के साथ सचिवालय पधारे ।

सचिवालय के महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने शिष्टमंडल का हार्दिक स्वागत किया और सचिवालय द्वारा किए जा रहे कार्यों से शिष्टमंडल को अवगत कराते हुए कहा कि सचिवालय इस समय अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। स्थानीय नियुक्तियाँ होने तथा सचिवालय का स्थायी भवन बनकर तैयार होने के उपरांत ही सचिवालय की बहुविध गतिविधियों में तेजी आएगी । सचिवालय के भवन का निर्माण कार्य इसी वर्ष से प्रारंभ होनेवाला है । उन्होंने कहा कि सचिवालय द्वारा 'विश्व हिंदी दिवस' मनाने के साथ ही कई अन्य संगोष्ठियों का आयोजन भी स्थानीय रूप से किया जाता है । अपनी गतिविधियों को कार्यान्वित करने के लिए समय-समय पर भारतीय उच्चायोग, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र एवं अन्य स्थानीय हिंदी सेवी संस्थाओं का सहयोग भी लिया जाता है । शिष्टमंडल के कुछ सदस्यों ने सचिवालय स्थित पुस्तकालय का अवलोकन भी किया ।

डॉ. मिश्र ने शिष्टमंडल के सदस्यों को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक 'विश्व हिंदी पत्रिका' का प्रवेशांक तथा

सचिवालय में शिष्टमंडल के सांसद व अधिकारीगण

त्रैमासिक 'विश्व हिंदी समाचार' के कुछ अंक भेंट स्वरूप प्रदान किए। उन्होंने बताया कि 'वार्षिक हिंदी पत्रिका' में संकलित लेखों से हिंदी की वैश्विक स्थिति की एक झलक मिल जाती है । यह वार्षिक पत्रिका प्रत्येक वर्ष प्रकाशित करने की योजना है । इसका अगला अंक वर्ष 2010 में प्रकाशित होगा ।

माननीय अध्यक्ष महोदया ने विश्व हिंदी सचिवालय की आगंतुक-पुस्तिका में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए लिखा -

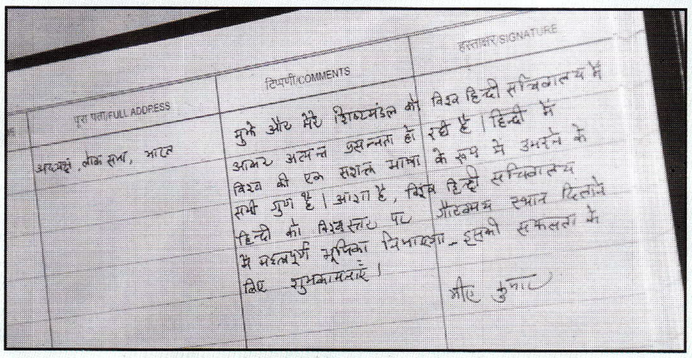

'' मुझे और मेरे शिष्टमंडल को विश्व हिन्दी सचिवालय में आकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है । हिन्दी में विश्व की एक सशक्त भाषा के रूप उभरने के सभी गुण हैं । आशा है, विश्व हिन्दी सचिवालय हिन्दी को विश्व स्तर पर गौरवमय स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा -- इसकी सफलता के लिए शुभकामनाएँ ।''

अध्यक्ष महोदया ने शिष्टमंडल की ओर से महासचिव को भारतीय संसद का एक ' स्मृति-चिह्न ' भी प्रदान दिया । ••

महासचिव की ओर से

बदलते परिदृश्य

विश्व हिंदी सचिवालय का यह त्रैमासिक प्रकाशन इस 9वें अंक के साथ तृतीय वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अब तक प्रकाशित 8 अंकों में विश्व के किसी भी कोने में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध विभिन्न संस्थाओं, शिक्षण संस्थानों अथवा व्यक्तियों द्वारा जो प्रयास किए जा रहे हैं, उनके संबंध में समाचार-पत्र के सीमित कलेवर को ध्यान में रखकर यथासंभव सूचनाएँ प्रकाशित करते रहे हैं। वर्ष 2010 में भी हमारा यह प्रयास रहेगा कि हम इस समाचार-पत्र के माध्यम से हिंदी की वैश्विक स्थिति से आपको अवगत कराते रहें।

'विश्व हिंदी दिवस' के अवसर पर 10 जनवरी, 2010 को सचिवालय द्वारा एक भव्य समारोह का आयोजन मॉरीशस स्थित इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में किया गया। इस बार का समारोह पिछले वर्ष की तुलना में कुछ भिन्न था। वर्ष 2009 में सचिवालय और भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्वावधान में समारोह का आयोजन किया गया था, जबकि इस बार के आयोजन में भारतीय उच्चायोग के साथ-साथ मॉरीशस के शिक्षा, संस्कृति व मानव संसाधन मंत्रालय, हिंदी संगठन एवं इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र का सहयोग भी मिला। अत: समारोह का आयोजन इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के विशाल सभागार में किया गया और मॉरीशस के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरूद्ध जगन्नाथ जी ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारकर समारोह की गरिमा बढ़ाने के साथ ही अपने हिंदी उद्‌बोधन से हिंदी प्रेमियों का उत्साह भी बढ़ाया।

इस समारोह में सचिवालय की ओर से मुख्य वक्ता के रूप में हंगरी की हिंदी विदुषी डॉ.मारिया न्यजैशी को आमंत्रित किया गया था। 'विश्व हिंदी दिवस' के अवसर पर अतिथि-वक्ताओं द्वारा जो व्याख्यान अथवा उद्‌बोधन दिए गए उनके कुछ अंश इसी अंक में प्रकाशित किए जा रहे हैं।

इस बार के 'विश्व हिंदी दिवस' समारोह का एक अन्य आकर्षण था, सचिवालय के वार्षिक प्रकाशन 'विश्व हिंदी पत्रिका' के वर्ष 2009 के प्रवेशांक का प्रकाशन, जिसका लोकार्पण महामहिम राष्ट्रपति जी के कर-कमलों से संपन्न हुआ। इसमें संकलित लेखों से सुधी पाठकों को हिंदी के वैश्विक परिदृश्य की जानकारी अवश्य मिलेगी । इस वार्षिक अंक के संबंध में पाठकों के उत्साहजनक उद्‌गार/सुझाव हमें प्राप्त होने लगे हैं। जिन हिंदी प्रेमियों को हमारी यह वार्षिक पत्रिका मिली हो, उनसे अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया/सुझाव अवश्य भेजें। हमारा प्रयास रहेगा कि उनमें से कुछ उद्‌गार/सुझाव हम वार्षिक पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित करें।

भारत में भी विदेश मंत्रालय द्वारा 'विश्व हिंदी दिवस' का आयोजन 10 जनवरी, 2010 को किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा-दिल्ली, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ रहे विदेशी छात्रों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। उस प्रतियोगिता में अनेक विदेशी छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

'विश्व हिंदी दिवस' के अवसर पर आयोजित समारोह में विदेश राज्यमंत्री, श्रीमती प्रनीत कौर ने अपने अभिभाषण में अन्य बातों के साथ-साथ जिस चुनौतीपूर्ण आवश्यकता की ओर संकेत किया, वह है विदेशों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए एक-जैसा हिंदी पाठ्यक्रम तैयार करना। वैश्विक स्तर पर हिंदी की लोकप्रियता एवं प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने के लिए हिंदी शिक्षण हेतु मानक पाठ्यक्रम बनाने का समय अब आ गया है। इस संबंध में 14-18 सितंबर, 1999 को लंदन में हुए छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में एक संकल्प भी पारित किया गया था। उसके बाद 13-15 जुलाई, 2007 को न्यूयार्क में हुए आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित दस संकल्पों में सबसे पहला संकल्प भी यही था कि विदेशों में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाया जाए। माननीय मंत्री महोदया के अभिभाषण से ऐसा प्रतीत होता है कि अब यह कार्य शीघ्रता से आगे बढ़ेगा।

समस्त हिंदी प्रेमियों से अनुरोध है कि वे अपनी ओर से अथवा अपनी संस्था की ओर से हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों की रिपोर्ट और संबंधित तसवीरें हमारे निम्न पते पर डाक, ई-मेल या फिर फैक्स से अवश्य भिजवाते रहें ताकि इन समस्त गतिविधियों की जानकारी 'विश्व हिंदी समाचार' के माध्यम से विश्व व्यापी हिंदी पाठकों तक पहुँचाई जा सके।..

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

संपादक
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

संपादन सहयोग
सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
श्रीमती विजया सरजु

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu

विश्व हिंदी सचिवालय की द्वितीय वर्षगांठ

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के माननीय सदस्य श्री सत्यदेव टेंगर द्वारा भाषण

विश्व हिंदी सचिवालय ने 11 फरवरी, 2010 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में अपने आधिकारिक कार्यारंभ की द्वितीय वर्षगांठ के अवसर पर 'संयुक्त राष्ट्र में हिंदी : हमारी तैयारियाँ' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया । इस संगोष्ठी में बीज-वक्तव्य देने के लिए सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान श्री नारायण कुमार जी को भारत से आमंत्रित किया गया था । इस अवसर पर सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य माननीय श्री सत्यदेव टेंगर और भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने भी सारगर्भित व्याख्यान दिए । शासी परिषद के अन्य सदस्य श्री अजामिल माताबदल जी ने भी अपनी उपस्थिति एवं आशीर्वचनों से संगोष्ठी को गरिमा प्रदान की ।

विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने संगोष्ठी में भाग लेने आए समस्त विद्वानों, हिंदी सेवियों एवं हिंदी प्रेमियों का हार्दिक स्वागत करते हुए इस बात के प्रति प्रसन्नता व्यक्त की कि संपूर्ण मॉरीशस में महाशिवरात्रि की व्यस्तताएँ होने के बावजूद इतनी बड़ी संख्या में संगोष्ठी में भाग लेने आना वाकई आप सबका हिंदी के प्रति प्रेम दर्शाता है । उन्होंने सभी शिव भक्तों को महाशिवरात्रि की शुभकामनाएँ दीं । उन्होंने संगोष्ठी के लिए रखे गए विषय की ओर सबका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि अब केवल भाषणों से काम नहीं चलनेवाला। अब समय आ गया है कि हम सबको बैठकर इस बात पर गंभीरता से विचार करना है कि आखिर हमें वे कौन-कौन-सी और कैसी तैयारियाँ करनी होंगी जिससे कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने का मार्ग सुगम और प्रशस्त हो सके । आज की संगोष्ठी में इन्हीं बातों पर भारत से आमंत्रित हिंदी विद्वान श्री नारायण कुमार, सचिवालय की शासी परिषद के माननीय सदस्य श्री सत्यदेव टेंगर और भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. जयप्रकाश कर्दम विस्तार से प्रकाश डालेंगे ।

संगोष्ठी के प्रथम वक्ता माननीय श्री सत्यदेव टेंगर ने इस अवसर पर न केवल कुछ दस्तावेज़ उपस्थित विद्वानों को दिखाए, बल्कि उन प्रावधानों पर भी प्रकाश डाला जिसके ज़रिये हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाना संभव हो सकेगा । उन्होंने कहा कि हिंदी को लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए कूटनीति से काम लेने की आवश्यक्ता है । इसके लिए फ्राँकोफ़ोनी के सदस्य देशों को तैयार करना होगा । बल्कि अफ्रीका में सादेक के सदस्य देशों की भी सहायता ली जा सकती है । उन्होंने कहा कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने का मार्ग कठिन अवश्य है, परंतु यदि विश्वव्यापी हिंदी प्रेमी इसके लिए संकल्प कर लें तो वह दिन दूर नहीं, जब हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना स्थान बना पाएगी ।

भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव एवं संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने कहा कि इस दिशा में हमें तब सफलता मिलेगी, जब हम स्वयं अपने घर में, बाज़ार में और सार्वजनिक स्थलों पर हिंदी बोलेंगे और हिंदी को मीडिया की, विज्ञापनों की भाषा बनाने में सफलता प्राप्त कर लेंगे । यदि हम हीन ग्रंथियों के शिकार होते रहेंगे और हिंदी बोलने में शर्म महसूस करेंगे तो हमें इस दिशा में सफलता पाने की उम्मीद छोड़ देनी चाहिए । डॉ. कर्दम का आशय यह था कि हिंदी को राष्ट्र संघ में पहुँचाने के लिए हमें जनमत तैयार करने की ज़रूरत है । यह जनमत न सिर्फ भारत और मॉरीशस में, बल्कि संपूर्ण विश्व में तैयार करना होगा।

भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. जय प्रकाश कर्दम द्वारा भाषण

'संयुक्त राष्ट्र में हिंदी : हमारी तैयारियाँ ' पर बीज-वक्तव्य देते हुए भारत के सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान श्री नारायण कुमार ने कहा कि हिंदी विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा और राजभाषा है तथा संसार के अधिकांश देशों में रहनेवाले भारतवंशी अपने पूर्वजों की भाषा के रूप में हिंदी का सम्मान और व्यवहार करते हैं। अतः विश्व के इतने बड़े भूभाग की भाषा को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाना विश्व जनमत की भावना को न्यायोचित अधिकार देना होगा। उन्होंने यह भी बताया कि 26 जून, 1945 को जब यू.एन.चार्टर पर हस्ताक्षर किए गए उस समय भारत स्वाधीन नहीं हुआ था, इसलिए संभवतः भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में शामिल करने पर विचार नहीं किया गया। अब संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों की संख्या 51 से बढ़कर 192 हो गई है, अतः सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्य के रूप में भारत को शामिल करना चाहिए तथा भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का सम्मान देना चाहिए।

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाए जाने के संबंध में विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित प्रस्तावों, भारत सरकार की केंद्रीय हिंदी

बीज वक्तव्य देते हुए सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान श्री नारायण कुमार

संगोष्ठी में पधारे मॉरीशस के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार व हिंदी प्रेमी

समिति के निर्णय, मॉरीशस, रूस, नेपाल आदि देशों द्वारा व्यक्त समर्थन का उल्लेख करते हुए श्री कुमार ने कहा कि इस दिशा में आर्थिक, राजनयिक एवं संरचनात्मक समस्याओं के समाधान के लिए भारत सरकार तत्पर है तथा उसने एक तथ्यात्मक दस्तावेज़ तैयार करवाकर भारत स्थित विदेशी दूतावासों और विदेश स्थित भारतीय दूतावासों को भेजा है। सूरीनाम में 5 से 9 जून, 2003 तक संपन्न सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाए जाने के बारे में लिए गए निर्णय के बाद विदेश मंत्रालय में इस कार्य के लिए एक उप समिति भी बनाई गई है जो इस संबंध में कार्रवाई कर रही है। भारत के प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह ने भी यह आश्वासन दिया है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में शामिल करवाने के लिए भारत सरकार पर्याप्त आर्थिक व्यवस्था और राजनीतिक पहल करेगी। अब आवश्यकता इस बात की है कि संयुक्त राष्ट्र में सामान्य बहुमत प्राप्त करने यानी 98 से 100 देशों का समर्थन जुटाने के लिए भारत, मॉरीशस, गयाना, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों के साथ-साथ संसार के विभिन्न देशों में रहनेवाले भारतवंशी एकजुट होकर प्रयास करें।

अपने सारगर्भित तथ्यात्मक व्याख्यान के अंत में श्री कुमार ने स्पष्ट किया कि खर्च का बहाना बनाकर ही काफ़ी समय तक सिर्फ अंग्रेज़ी और फ्रेंच को संयुक्त राष्ट्र की कामकाज की भाषा बनाया गया था और स्पेनिश, रूसी, चीनी आदि भाषाएँ महज़ आधिकारिक भाषा थी। परंतु बाद में अरबी सहित इन सभी भाषाओं को यू.एन. के कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकृति मिली। अत: संसार के इतने बड़े भूभाग की भाषा को जिनके बोलनेवालों की संख्या विश्व में सर्वाधिक है संयुक्त राष्ट्र में आधिकारिक भाषा न बनाया जाना विश्व-जनमत का निरादर है। अब भारत की आर्थिक प्रगति के बाद यह कार्य आसान हो गया है। अत: यही उचित समय है जब भारत सरकार, प्रवासी भारतीय और भारतवंशी विश्व समुदाय मिलकर हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए संसार के देशों से समर्थन प्राप्त करे।

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा इस दिशा में की गई पहल के लिए उन्होंने सचिवालय के नव-नियुक्त महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन जुटाना, इस सचिवालय के लिए मॉरीशस एवं भारत सरकार द्वारा प्रदत्त दायित्वों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। अत: सचिवालय को संसार के प्रमुख देशों में सेमिनार, संगोष्ठियाँ आयोजित कर इसके लिए जनमत तैयार करना चाहिए। डॉ. मिश्र की कार्य-शैली और हिंदी भाषा के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भाव का उल्लेख करते हुए श्री कुमार ने कहा कि मॉरीशस एवं भारत सरकार इस महान उद्देश्य को पूरा करने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय को पूर्ण सहयोग देंगे ताकि प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ.सर शिवसागर रामगुलाम का संकल्प साकार हो सके।

संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए आदरणीय श्री रामनाथ जीता एवं डॉ. कृष्ण कुमार झा ने विश्व हिंदी सचिवालय को बधाई देते हुए अपने उद्गार प्रकट किए। मॉरीशस के सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ ने अपनी कुछ हिंदी पुस्तकें श्री नारायण कुमार को भेंट की। संगोष्ठी में उपस्थित कुछ विद्वानों ने खुले सत्र के दौरान डॉ. कर्दम और श्री नारायण कुमार से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न भी किए, जिनके उत्तर विद्वानों ने दिए।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी में श्रीमती अनिता अरोड़ा, डॉ. अभिमन्यु अनत, डॉ. बीरसेन जागासिंह, श्री सत्यदेव प्रीतम, डॉ. उदय नारायण गंगू, श्री राजनारायण गती, श्री प्रह्लाद रामशरण, श्री सोनालाल नेमधारी, पं.हनुमान गिरधारी, श्री नारायणपत दसोई, श्री वेणीमाधव रामखेलावन, श्री बलवंतसिंह नौबतसिंह, श्री दीपक नवीन, सुश्री अनुपमा चमन, डॉ. रेशमी रामदोनी, श्री लखनलाल मोतिया, श्रीमती अंजू घरभरन, श्री सूर्यदेव सिबोरत सहित अनेक विद्वान उपस्थित थे।

संगोष्ठी के बाद सचिवालय द्वारा आमंत्रित स्थानीय कवियों श्री अजामिल माताबदल, डॉ. बीरसेन जागासिंह, श्रीमती कल्पना लाल जी, श्री राज हीरामन, श्री विनय गुदारी, डॉ. सुरीति रघुनंदन, डॉ. राजरानी गोबिन, श्री धनराज शंभु, डॉ. अल्का धनपत, श्री गुलशन सुखलाल, श्रीमती सीता रामयाद एवं श्रीमती भानुमती नागदान ने अपनी-अपनी कविताओं का सस्वर पाठ किया।

इस तरह विश्व हिंदी सचिवालय का द्वितीय वर्षगांठ एक सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

प्रस्तुति :श्रद्धांजलि हजगैबी

कोपनहेगन में 'वेयर डू आई बिलांग का विमोचन'

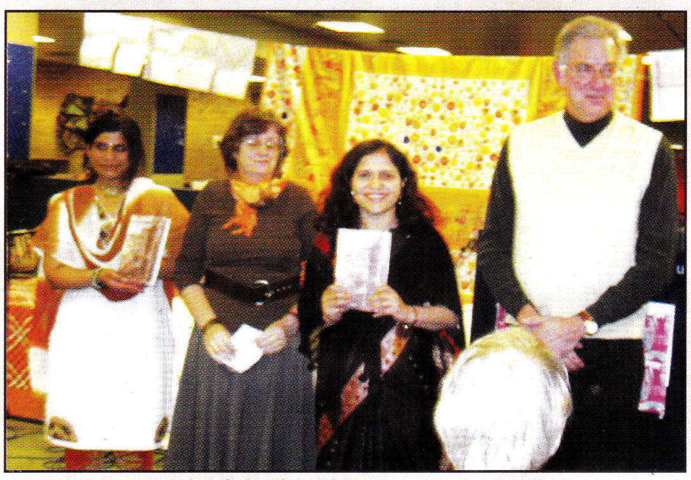

चित्र में दाएँ से बाएँ : डॉ. कैनथ ज्यूस्क, अर्चना पैन्यूली, मैरी ओहरा और अखिला रमन

एशियन म्यूज़िक संस्था, डेनमार्क ने 27 फरवरी, 2010 को होली के अवसर पर आयोजित शास्त्रीय संगीत संध्या पर अर्चना पैन्यूली का नया उपन्यास ' वेयर डु आई बिलांग ' का लोकार्पण किया। उपन्यास का विमोचन डॉ. कैनथ ज्यूस्क, एशियन शिक्षा विभाग, कोपनहेगन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष ने किया। प्रबुद्ध श्रोताओं में डेनमार्क में बसे भारतीय समुदाय के कई साहित्य व संगीत प्रेमियों के अलावा स्थानीय डेंस भी उपस्थित थे।

भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, भारत द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास योरोपीय वातावरण में रह रहे एक ऐसे भारतीय परिवार की कहानी है, जिसके माध्यम से लेखिका ने भारतीय कठिनाइयाँ, उनके सोच-विचार, दो संस्कृतियों के बीच आप्रवासियों की जीवन शैली, संघर्ष, दुविधाओं, कठिनाइयों, उनके सोच-विचार के बीच उनके संघर्ष व इमीग्रेशन इशू आदि को दर्शाया है।

उपन्यास की प्रमुख पात्र नवयुवती रीना है। रीना की ज़िंदगी के पाँच अहम वर्ष उपन्यास में वर्णित है। इन पाँच वर्षों के अंतराल में आज के युग की किसी महत्वाकांक्षी नवयुवती को अपना कैरियर बनाने के अतिरिक्त जीवन साथी की भी खोज होती है। एक इमीग्रेंट होने की वजह से कई दुविधाएँ पैदा हो जाती हैं। उपन्यास अप्रवासन मुद्दों एवं अप्रवासित परिवार व समुदाय के विषय में बहुत कुछ बयाँ करता है। लोकार्पण समारोह में डॉ. कैनथ ज्यूस्क के अतिरिक्त रितु किश्नन, अखिला रमन, मैरी ओहरा व गुरुचरण मिंगलानी ने उपन्यास पर अपने विचार प्रस्तुत किये। डॉ.कैनथ ज्यूस्क ने कोपनहेगन विश्वविद्यालय में इंडोलोजी व आधुनिक भारत पर चल रहे शैक्षिक कार्यक्रमों पर भी प्रकाश डाला।

रितु किश्नन ने कहा : " हिंदी पुस्तकें मैं कोई खास नहीं पढ़ती थी। ' वेयर डू आई बिलांग ' पढ़ते हुए मैं इसमें इतनी रम गई कि इसके पात्रों व घटनाओं में खो गई। हिंदी किताबों के प्रति मेरा रुझान बढ़ गया।" मूलतः तमिल प्रदेश की रहनेवाली अखिला रमन ने कहा : ' यह उपन्यास युवा पीढ़ी के लिए है और इसकी सफलता तभी है जब यह अधिक युवकों के पास पहुँचे।'

अंत में लेखिका ने ऐशियन म्यूज़िक फ़ोरनिंग (संस्था), डॉ. कैनथ ज्यूस्क, अपने पाठकों व श्रोताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा : " किसी रचना विशेष पर पाठकों की टिप्पणी व किसी संस्था द्वारा उसकी पुस्तक का लोकार्पण करना लेखक को नवीन ऊर्जा से भर देता है जिससे उसका साहित्य सर्जन थमता नहीं। ".

बुदापैश्त में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

चित्र में बाएँ से दाएँ : एल्ते विश्वविद्यालय के डीन डॉ.देजो तमाश, सुश्री संगीता बहादुर, श्री आनंद शर्मा, महामहिम श्री रंजीत राय, डॉ.मारिया न्यजैशी

यूरोप के भारत प्रेमी देशों में हंगरी का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। भारतीय मूल के लोगों की संख्या अत्यल्प होने के बावजूद आम हंगारी लोगों के मन में भारतीय साहित्य और संस्कृति के प्रति बेहद लगाव है। भारत से गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर का हंगरी में आगमन हुआ परंतु उनके काव्य से यहाँ के साहित्य-प्रेमी पहले से ही परिचित थे। बालाटन में स्थित गुरुदेव की प्रतिमा और उनका कक्ष इस बात का प्रतीक है कि वे आज भी हंगरी के जन-मानस में उतने ही आदरणीय हैं। हंगरी और भारत की सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करने वाले भारतविदों की लंबी परंपरा आज भी हंगरी में विद्यमान है।

इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इत्वोस लोरांद विश्वविद्यालय, बुदापैश्त, हंगरी के भारत विद्या अध्ययन विभाग ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद एवं भारतीय दूतावास (हंगरी) के सहयोग से एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस अवसर पर भारत के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री श्री आनंद शर्मा के अतिरिक्त हंगरी में भारत के राजदूत महामहिम श्री रंजीत राय, एल्ते विश्वविद्यालय के डीन डॉ0 देजो तमाश, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की उप महानिदेशक सुश्री संगीता बहादुर, विभागाध्यक्षा डॉ. मारिया न्यजैशी, भारतीय दूतावास के सांस्कृतिक सचिव श्री वी.वी. मोहन एवं एल्ते में हिंदी के विजिटिंग प्रोफेसर डॉ0प्रमोद कुमार शर्मा भी उपस्थित थे।

अपने उद्घाटन भाषण में श्री आनंद शर्मा ने भारत और हंगरी के प्रगाढ़ एवं पुराने संबंधों को याद करते हुए सन् 2011 में गुरुदेव की एक सौ पचासवीं जयंती हंगरी में भी मनाने की योजना पर विचार करने का आश्वासन दिया। हंगरी में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एल्ते विश्वविद्यालय एवं मारिया न्यजैशी की प्रशंसा करते हुए श्री शर्मा ने इस दिशा में भारत सरकार के सहयोग की भी चर्चा की। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की उप महानिदेशक सुश्री संगीता बहादुर ने परिषद की योजनाओं का परिचय दिया। विभागाध्यक्ष डॉ.मारिया ने सबका धन्यवाद करते हुए भविष्य में भी भारत सरकार से ऐसे ही सहयोग की आशा व्यक्त की।..

डॉ.गीता शर्मा

समीक्षा

क्या आपने पढ़ा है ? – 'विश्व हिंदी समाचार'

विश्व हिंदी समाचार

वर्ष : 2 अंक : 8 दिसंबर : 2009

मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित

समाचार प्रधान पत्रिका 'विश्व हिंदी समाचार' के दिसंबर, 2009 में प्रकाशित आठवें अंक में अति महत्वपूर्ण समाचारों का प्रकाशन किया गया है। इस पत्रिका के समाचारों से विश्व भर में हिंदी भाषा व साहित्य जगत में हो रहे अद्यतन कार्यों की जानकारी मिलती है। पत्रिका के मुखपृष्ठ पर 'मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरूद्ध जगन्नाथ डी.लिट् की मानद उपाधि से विभूषित' का प्रकाशन बहुत ही सुंदर ढंग से किया गया है। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा में 9 दिसंबर 2009 को आयोजित एक भव्य समारोह में उन्हें डी.लिट् की उपाधि प्रदान की गई। उनके द्वारा भोजपुरी में दिए गए अपने उद्बोधन में स्पष्ट किया गया कि मॉरीशस में रह रहे भारतवंशियों के खून में हिंदी रचती बसती है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की वेबसाइट हिंदीसमयडाट काम का लोकार्पण भी उनके द्वारा किया गया।

दूसरे पृष्ठ पर भारतीय उच्चायोग द्वारा मॉरीशस में आयोजित हिंदी दिवस व हिंदी निबंध प्रतियोगिता के आयोजन को स्थान दिया गया है। इस अवसर पर श्री प्रशांत पीसे, उप उच्चायुक्त ने श्री पी. चिदंबरम, गृहमंत्री भारत सरकार का तथा सुश्री सुजा के.मेनन, द्वितीय सचिव ने विदेश सचिव, श्रीमती निरूपमा राव का संदेश उपस्थित श्रोताओं के समक्ष पढ़कर सुनाया। इसी पृष्ठ पर भूटान के शहर फुंछोलिंग में पहली बार आयोजित हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा के आयोजन का समाचार प्रकाशित किया गया है।

प्रधान संपादक श्रीमती विनोद बाला अरुण ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। संपादक डॉ.राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने विश्व हिंदी दिवस तथा महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की गतिविधियों पर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। प्रो. योशिफुमि मिजुनो (जापान) ने ' टोक्यो के आसपास हिंदी शिक्षण ' आलेख में स्पष्ट किया है कि छात्र/ छात्राएँ अनिवार्य रूप से नहीं, अपनी इच्छा से हिंदी चुनकर पढ़ते हैं।

अमेरिका में सक्रिय हिंदी पाठशालाएँ आलेख वहाँ के हिंदी शिक्षण केन्द्रों की जानकारी देता है। अन्य समाचारों में डॉ.अभिमन्यु अनत और प्रो.पुष्पिता अवस्थी को शमशेर सम्मान, दिमाग को चुस्त बनाती है हिंदी, यू.के. में भाषिक कम्प्यूटिंग और मल्टी मीडिया कार्यशालाएँ, जमैका के हिंदी छात्र पिकनिक पर आदि का बहुत ही सुंदर ढंग से प्रकाशन किया गया है। पत्रिका ने ख्यात पत्रकार व लेखक स्व. प्रभाष जोशी व स्व. मुनीश्वरलाल चिंतामणि को श्रद्धांजलि अर्पित की है। पत्रिका के शानदार कलेवर व प्रस्तुतीकरण अनुकरणीय व प्रभावशाली है। बधाई।..

कथा-चक्र.ब्लॉगस्पॉट.कॉम से साभार

महात्मा गाँधी संस्थान में कार्यशाला

जिष्णु होरिशरण

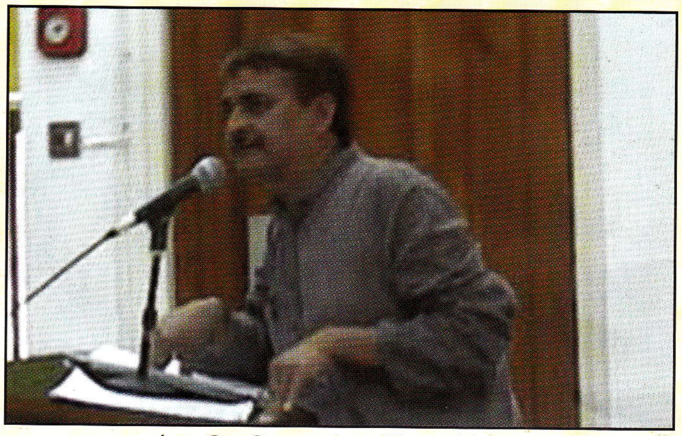

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. देवेंद्र चौबे

इतिहास का गहरा संबंध जन-समाज के संघर्ष और उसके विकास के साथ होता है। अतीत में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो किसी भी समाज और उसके राष्ट्र के इतिहास के अहम हिस्से होते हैं। भारत या हिंदी साहित्य के इतिहास में 1857 एक ऐसा ही मोड़ है जो उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के साथ हुए संघर्ष की याद दिलाता है तथा एक अर्थ में आधुनिक काल में हुए संघर्ष की रूपरेखा भी तय करता है। इसी प्रकार स्वाधीनता के बाद के इतिहास में स्त्री और दलितों का सवाल एक बड़ा मुद्दा है जो इतिहास-लेखन की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। ये बातें हिंदी साहित्य के इतिहास पर पुनर्विचार पर महात्मा गाँधी संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में मुख्य वक्तव्य देते हुए लेखक और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. देवेंद्र चौबे ने कही। कार्यक्रम की शुरुआत में हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. राजरानी गोबिन ने कहा कि यह कार्यशाला साहित्य के इतिहास पर पुनर्विचार के बहाने इतिहास के पठन-पाठन में हमारी दिलचस्पी जगाएगी।

मॉरीशस के सुप्रसिद्ध कथाकार रामदेव धुरंधर ने बहस में भाग लेते हुए कहा कि मॉरीशस में आप्रवासी मज़दूरों का इतिहास शोषण और उत्पीड़न का रहा है । उन्होंने हमेशा शक्कर कोठी के मालिकों के दमन के खिलाफ़ अपने हाथ उठाए। उन हाथों को काटा गया, फिर भी वे हाथ विरोध में उठते रहे। इस इतिहास में दमन के इस रूप को भी देखना ज़रूरी है। साहित्य के इतिहास पर हुई इस बहस में श्री विनय गुदारी, श्री मोहेश, श्री आनंद, डॉ. के.के.झा, श्री चिंतामणि, जयगणेश, संध्या अंचराज़-नावोसा, जिष्णु होरिशरण आदि ने सक्रिय रूप से भाग लिया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. संयुक्ता भुवन-रामसारा और श्री गुलशन सुखलाल ने किया। डॉ. संयुक्ता ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इतिहास के बहाने हम अपने वर्तमान को सुधारते हैं और असंगतियों को ध्यान में रखते हुए विकास की ओर अग्रसर होते हैं। श्री गुलशन सुखलाल ने कहा कि इतिहास-लेखन में हमेशा नए दृष्टिकोण की ज़रूरत होती है। अब तक का इतिहास हम पुरानी परिपाटी से देखते आए हैं। ..

हिंदी विभाग, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, मॉरीशस।

हिंदी विश्व भाषा बनकर रहेगी

उद्‌घाटन वक्तव्य देते हुए हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री हिमांशु जोशी

चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय के 'बृहस्पति भवन' में हिंदी विभाग द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश से आए हुए हिंदी विद्वानों का समागम हुआ। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.एस.के.काक ने कहा कि भाषा सिर्फ एक माध्यम है, एक दूसरे से जुड़ने का, उसे आपस में बाँटने का माध्यम न बनाया जाए। हर भाषा को अपना विकास करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

कार्यक्रम में उद्‌घाटन वक्तव्य देते हुए हिंदी के वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार श्री हिमांशु जोशी ने कहा कि आज हिंदी दुनिया के 157 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है और आँकड़े बताते हैं कि आज हिंदी ने अंग्रेज़ी भाषा को बहुत पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने आँकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि फीजी, मॉरीशस, गयाना, सूरीनाम, इंग्लैंड, नेपाल, थाईलैंड जैसे देशों में हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है। विशिष्ट अतिथि इज़रायल से आए हिंदी विभागाध्यक्ष, प्रो. गेनाडी श्लोम्पेर ने आर्थिक उदारीकरण के दौर में हिंदी की ताकत के बारे में बताते हुए कहा कि हिंदी के कारण बहुत से लोगों को रोज़गार मिलने लगा है।

मेरठ के सांसद और संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य श्री राजेंद्र अग्रवाल ने कहा कि अभिव्यक्ति, सामर्थ्य और साहित्य की दृष्टि से हिंदी विश्व की सर्वाधिक समर्थ भाषा है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आज भी इस देश के कार्यालयों में राजभाषा की स्थिति की समीक्षा करने के लिए किसी समिति की आवश्यकता पड़ती है। फिर भी मैं हिंदी के विश्व भाषा बनने के प्रति शत-प्रतिशत आश्वस्त हूँ।

हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री.से.रा.यात्री ने हिंदी के विश्व भाषा बनने के मार्ग की बाधाओं का ज़िक्र करते हुए कहा कि इसी गढ़ के विश्वविद्यालय में 36वर्षों तक हिंदी का पाठ्यक्रम प्रारंभ नहीं हुआ। हमें इसके कारणों की पड़ताल करनी होगी। ब्रिटेन में पूर्व हिंदी अताशे तथा वर्तमान में सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री राकेश दुबे ने हिंदी की दुनिया के व्यापक परिप्रेक्ष्य को दर्शाते हुए लगभग 150 देशों में हिंदी प्रयोग पर तथ्यात्मक प्रस्तुति दी।

'गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी' नामक द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो.गंगाप्रसाद विमल ने की।'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी' विषय पर केंद्रित सत्र की अध्यक्षता अमेरिका से आए कहानीकार और मीडिया विशेषज्ञ श्री उमेश अग्निहोत्री ने की। सर्जनात्मक लेखन विभाग, महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस के अध्यक्ष डॉ.हेमराज सुंदर ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि हिंदी प्रकाशन गृहों के अभाव में हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधा उत्पन्न हो रही है। लंदन से आई कवयित्री और ब्लॉग संपादक सुश्री कविता वाचक्नवी ने कहा कि भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी में विकास की अपार संभावनाएँ हैं। ब्रिटेन से आई कवयित्री जया वर्मा ने भी ब्रिटेन में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डाला। सत्र की अध्यक्षता करते हुए अमेरिका से आए श्री उमेश अग्निहोत्री ने कहा कि हिंदी ऐसी भाषा है जो कभी लुप्त नहीं हो सकती। उन्होंने बताया कि महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि अंग्रेज़ी न होती तो हिंदी संपर्क भाषा होती।

'सूचना प्रौद्योगिकी एवं हिंदी' की अध्यक्षता बुन्देलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी के कुलपति प्रो.वी.एस.राणा ने की। बीज वक्तव्य देते हुए इग्नू के हिंदी एवं मानविकी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो.वी.रा.जगन्नाथ ने कहा कि मशीन आधुनिक समय में काफ़ी परिवर्तन और क्रांतिकारी अवधारणाओं को संभव बना सकती है। प्रसिद्ध प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा कि आज कंप्यूटर के व्यापक प्रयोग के बावजूद हिंदी वाले उससे वंचित हैं।

'अनुवाद और हिंदी' की अध्यक्षता प्रसिद्ध भाषाशास्त्री एवं महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से पधारे प्रो.नरेश मिश्र ने की। बीज वक्तव्य देते हुए कुमायूँ विश्वविद्यालय से पधारे डॉ.सिद्धेश्वर ने कहा कि हिंदी में अनुवाद और अनुवादक को वह महत्त्व नहीं मिलता जो एक मूल रचनाकार को मिलता है। जबकि अनुवाद भी एक रचनात्मक कार्य है। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के साहित्य संकायाध्यक्ष प्रो.सूरज पालीवाल ने अनुवाद साहित्य में किए गए कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज हिंदी साहित्य में एक लाख पृष्ठों का साहित्य इंटरनेट पर उपलब्ध कराया गया है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के निदेशक (हिंदी) तथा गगनांचल के संपादक श्री अजय कुमार गुप्त ने हिंदी भाषा को राजनीतिक समर्थन प्रदान करने तथा संसद में इस आवाज़ को बुलंद करने पर ज़ोर दिया।

संगोष्ठी में उपस्थित देश-विदेश के साहित्यकार

सूचना विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ.श्याम सिंह 'शशि' ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि यह विश्वकुंभ है तथा मुझे यहाँ ही सुखद आश्चर्य अनुभव हुआ।

अंत में विभागाध्यक्ष प्रो.नवीन चंद्र लोहनी ने सभी अतिथियों को प्रतीक चिह्न देकर सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। माननीय कुलपति प्रो.एस.के.काक ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए इस संगोष्ठी को एक सफल मुहिम बताया और हिंदी के प्रचार-प्रसार की संभावना को व्यक्त किया। संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागियों/श्रोताओं से खचाखच भरे सभागार को देखकर माननीय कुलपति ने संगोष्ठी के सफल आयोजन पर विभागाध्यक्ष प्रो.नवीन चंद्र लोहनी को बधाई दी।...

हिंदी में है सबको जोड़ने की अद्‍भुत क्षमता

नरेश शांडिल्य

उत्सव का उद्‍घाटन : दाएँ से माननीय डॉ.कर्ण सिंह, महामहिम मुकेश्वर चुनी एवं डॉ.रत्नाकर पाण्डेय

अक्षरम् द्वारा आयोजित हिंदी का 8वां अंतर्राष्ट्रीय उत्सव भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सहयोग से दो दिनों तक (6-7 फरवरी, 2010) परिषद् के नई दिल्ली स्थित मुख्य सभागार में बहुत ही धूमधाम और गरिमापूर्ण ढंग से आयोजित हुआ । इस उत्सव में न केवल हिंदी के प्रवासी साहित्यकारों-विद्वानों ने बड़ी संख्या में हिस्सेदारी की अपितु तीन विदेशी मूल के हिंदी विद्वान विदुषियों (प्रो. तात्याना ओरंस्काइया, जर्मनी; प्रो. गेनादी श्लोम्पेर, इजरायल; तात्याना दुव्यांस्काया, रूस) ने शिरकत की।

इस उत्सव का उद्‍घाटन प्रख्यात संस्कृति पुरुष-विद्वान्-चिंतक -राजनेता डॉ. कर्ण सिंह ने किया । इस पुनीत अवसर पर भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त महामहिम मुकेश्वर चुनी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह की भव्यता, गरिमा और प्रभाव को देखते हुए डॉ. कर्ण सिंह ने महत्वपूर्ण घोषणा की कि भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् भविष्य में होनेवाले अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सवों को भी आयोजित करने में पूरा-पूरा सहयोग देगी । इस अवसर पर उन्होंने अक्षरम् के प्रयासों की खुलकर प्रशंसा की ।

इस उत्सव में कुल मिलाकर 6 अकादमिक सत्रों का आयोजन किया गया । इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय काव्य गोष्ठी, नाट्य मंचन और अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

विभिन्न सत्रों, कार्यक्रमों में लगभग 150 साहित्यकारों, विद्वानों ने अपने विचार रखे, जिनमें प्रमुख हैं : डॉ. रत्नाकर पाण्डेय, डॉ. कन्हैयालाल नंदन, प्रो. सादिक, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के महानिदेशक वीरेंद्र गुप्त, डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, चित्रा मुद्‍गल, राजी सेठ, डॉ. उदय प्रताप सिंह, बालस्वरूप राही, प्रो. अब्दुल वदूद अजहर दहलवी, डॉ.विजय कुमार मल्होत्रा, प्रो. गंगा प्रसाद विमल, प्रो.अशोक चक्रधर, लल्लन प्रसाद व्यास, डॉ. विमलेश कांति वर्मा, बालेंदु दाधीच, अजय नावरिया, उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के सचिव दिनेश राय और वाई.पी. सिंह। इनके अतिरिक्त प्रवासी साहित्यकारों, विद्वानों में डॉ. नरेश भारतीय (ब्रिटेन), डॉ.सत्येंद्र श्रीवास्तव (कैंब्रिज विश्वविद्यालय), डॉ.सरिता बुधु (मॉरीशस), डॉ.अलका धनपत (मॉरीशस), वीरेन संधु (ब्रिटेन) जय वर्मा (ब्रिटेन), स्नेह ठाकुर (कनाडा), कादंबरी मेहरा (ब्रिटेन), कविता वाचक्नवी (ब्रिटेन) और मोना कौशिक प्रमुख हैं ।

नाट्य मंचन कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध उपन्यासकार मृदुला गर्ग के उपन्यास 'कठगुलाब ' पर आधारित प्रस्तुति की गई । इस नाटक का निर्देशन प्रख्यात नाट्य-निर्देशक देवेंद्र राज 'अंकुर' ने किया। अक्षरम् के अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव का एक और सबसे बड़ा आकर्षण रहता है -- अक्षरम् का सम्मान अर्पण समारोह । इस बार का सम्मान अर्पण समारोह कई अर्थों में महत्वपूर्ण था । सम्मान समारोह की अध्यक्षता हिंदी के प्रख्यात कवि डॉ. कुंवर नारायण ने की । इस बार का अक्षरम् शिखर सम्मान देश के प्रख्यात साहित्यकार-समीक्षक डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय को तथा विदेश से सुपरिचित प्रवासी हिंदी विद्वान डॉ. नरेश भारतीय को दिया गया। इसके अतिरिक्त छह सम्मान और भी दिये गए, जिसमें दो विदेशी मूल के विद्वान भी शामिल थे ।

इस अवसर पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में डॉ. उदय प्रताप सिंह, बालस्वरूप राही, डॉ. कुंवर बेचैन, डॉ. सरोजिनी प्रीतम, आलोक श्रीवास्तव, प्रवीण शुक्ल, अनिल जोशी, नरेश शांडिल्य, शशिकांत ने तथा प्रवासी कवियों में डॉ. सत्येंद्र श्रीवास्तव, स्नेह ठाकुर, जय वर्मा, कविता वाचक्नवी, मोना कौशिक ने काव्य पाठ किया । कवि सम्मेलन का संचालन हिंदी मंच की प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. सरिता शर्मा ने किया ।

हिंदी के प्रख्यात कवि डॉ. कुंवर नारायण की पंक्तियाँ हैं : शायद नहीं जानता था विधाता भी / अपने विधान से पहले / कि वह एक निर्माता है । हम ' अक्षरम् ' के लोग भी नहीं जानते थे कि रफ्ता-रफ्ता चलते हुए हम एक दिन इस मुकाम पर आ जायेंगे कि हिंदी का 8वां अंतर्राष्ट्रीय उत्सव मना रहे होंगे । संभवत: यह ईश्वरीय कार्य ही है कि हम लगातार इतना बड़ा आयोजन करते आ रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे । 'सहकार ' और 'सरकार ' दोनों का सहयोग हमें निरंतर मिलता रहा है । यह

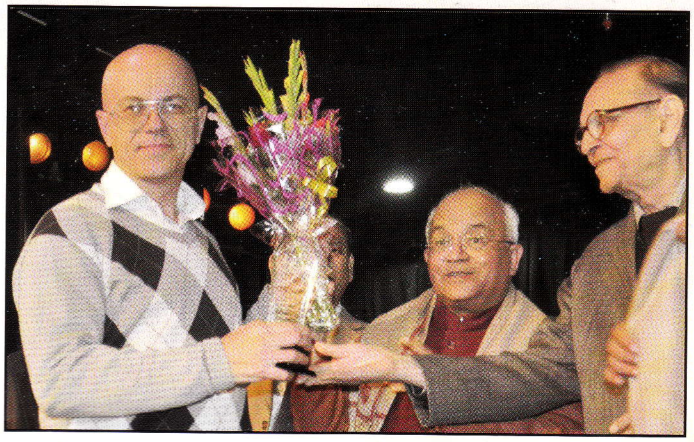

प्रो.गेनादी श्लोम्पेर को सम्मानित करते हुए डॉ.वेद प्रताप वैदिक व श्री कुँवर नारायण

यकीनन महत्वपूर्ण बात है और हिंदी में ही सबको एक साथ जोड़ने की जो अद्‍भुत सामर्थ्य है, यह सब उसी का ही सुफल है। हिंदी के मूल में एक उत्सव भावना है । उत्सव का अर्थ ही है : सभी की खुशी । हिंदी जोड़ने का पर्याय है । भारत की सभी भाषाओं-बोलियों का एक समग्र रूप है हिंदी । विश्व भर में भारत की एक पहचान है हिंदी । कुछ लोग, जिनका एकमात्र उद्‍देश्य राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि है, वर्तमान में ' भाषायी सांप्रदायिकता ' का माहौल पैदा कर रहे हैं । अक्षरम् इसकी पुरजोर आवाज में भर्त्सना करता है । हिंदी विखंडन की नहीं एके की भाषा है । आज कूपमंडूक सोच से उबरने की जरूरत है। उंगलियाँ जब एक साथ जुड़ती हैं तो मुट्‍ठी का रूप सामने आता है, अक्षरम् भी हिंदी के लिए उसी मुट्‍ठी का पर्याय है । हम मुट्‍ठी में नये-नये संकल्प लिए और आगे बढ़ेंगे क्योंकि हमें इसी से संतुष्ट नहीं होना है । ..

मार्च, 2010 हिंदी

हिंदी साहित्य के दो दशकों की यात्रा पर विमर्श

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कुलपति श्री विभूति नारायण राय। मंच पर बाएँ से दाएँ श्री राकेश, प्रो.असगर वजाहत, से.रा.यात्री और प्रो.सूरज पालीवाल

विश्व परिदृश्य में जो परिवर्तन हुए हैं, उनकी छाया कथा साहित्य में भी देखने को मिलती है। इस व्यापक वैश्विक परिवर्तन को रेखांकित करने तथा हिंदी कथा साहित्य में आए परिवर्तनों की पड़ताल करने के लिए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 29-31 जनवरी, 2010 तक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'कथा समय' का आयोजन विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ की ओर से किया गया।

'कथा समय' के उद्‌घाटन समारोह में बीज वक्तव्य देते हुए हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार और नाटककार असगर वज़ाहत ने कहा कि आज अभिव्यक्ति के माध्यम के लिए अखबारों में स्थान नहीं मिल रहा है, टीवी चैनलों में भी नहीं है, राजनीति में भी जगह नहीं मिल रही है। आज भी अभिव्यक्ति का आधार कथा साहित्य ही है।

उद्‌घाटन भाषण देते हुए वरिष्ठ कथाकार से.रा. यात्री ने कहा कि रचनाकार अपने कथ्य के साथ अपने शिल्प में भी एक विशेष किस्म का अलगाव अथवा भिन्नता प्रदर्शित करते हैं। कथ्य के साथ कथन का स्वरूप भी रचनाकार के व्यक्तित्व को रेखांकित करते हैं। संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से दुनिया छोटी हुई है तथा हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार भी बहुत तीव्र गति से हुआ है। आज जो परिवर्तन हो रहा है इसमें हमें वैचारिक व संवेदना की गहराई को तलाशने की ज़रूरत है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कुलपति श्री विभूति नारायण राय ने कहा कि समाज का आईना साहित्य का आंदोलन विहीन होना चिंतनीय है। स्वतंत्रता प्राप्ति के दौरान पूरा साहित्य आंदोलन के झंझावातों से जूझ रहा था। लेकिन आज हम कैसे विमुख हो रहे हैं, इसपर हमें सोचना होगा। यह सही है जो हाशिए पर थे, वे केंद्र में आ गए हैं। पहले हम मानते थे कि दलित विमर्श मराठी भाषा में ही दर्ज करा रहे हैं, जबकि आज इसकी छाप हिंदी में भी देखने को मिल रही है और इसका श्रेय 'हंस' को जाता है। इतना ही नहीं रवींद्र कालिया नई पीढ़ी को तैयार करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

विषय प्रवर्तन करते हुए साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल ने कहा कि हिंदी का कथ्य और उसके लोक दर्शन की परिकल्पना केवल इसलिए नहीं की गई है कि केवल कहानियों पर चर्चा की जाए, बल्कि इतिहास के जिस मोड़ पर हम खड़े है वह कितना खतरनाक स्थिति में है इसी बात को सारगर्भित करने के लिए 'कथा समय' का आयोजन किया गया है।'हिंदी कथा साहित्य के दो दशक' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार प्रो. गंगा प्रसाद विमल ने कहा कि पिछले दो दशक पिछली शताब्दी के अंतिम दशक के निष्कर्ष और नये शताब्दी के प्रवेश दशक के निष्कर्ष का युग्म है। नई पीढ़ियों से सर्जनात्मक लेखन की बहुत उम्मीद है जो भविष्य में कहानी की अस्मिता को बचाए रखने में मददगार होगी।

'हिंदी उपन्यास के दो दशक' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार भगवान दास मोरवाल ने कहा कि नई पीढ़ी लेखन को कैरियर के रूप में ले रही हैं। अब लेखन मैराथन दौड़ की तरह है जो इस प्रतिस्पर्धा में बने रहना चाहते हैं उन्हें धैर्य बनाए रखना होगा। आज के दौर में कथा लेखन मिशन के तौर पर नहीं बल्कि व्यावसायिकता को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

'कथा समय' के समापन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में साहित्यकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने कहा कि ये बात सामने आ रही है कि आज के लेखक आंदोलन से मुक्त हो गए हैं। सारे आंदोलन विचार की उपज से हुए हैं। आंदोलन से मुक्त होने का अर्थ है विचारों से मुक्त होना।

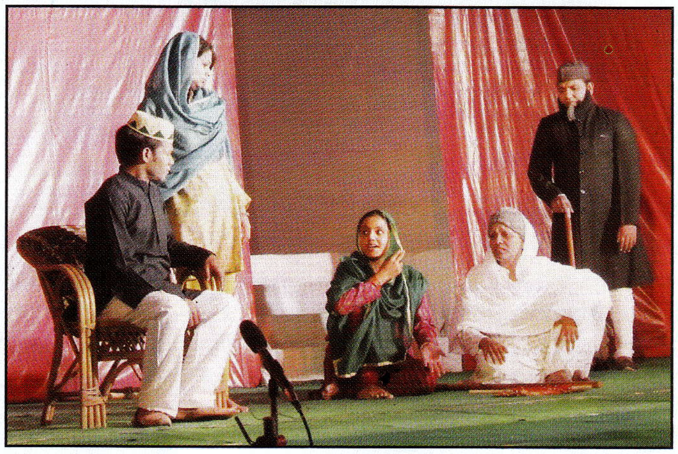

श्रीराम कला केंद्र, नई दिल्ली के कलाकारों द्वारा 'जिस लाहौर नई देख्या ओ जन्म्या नई' का मंचन

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कथाकार व नाटककार असग़र वज़ाहत द्वारा लिखित नाटक ' जिस लाहौर नई देख्या ओ जन्म्या नई ' का मंचन श्रीराम कला केंद्र, नई दिल्ली के कलाकारों द्वारा किया गया। नाटक के निर्देशन की भूमिका राजेंद्र नाथ ने निभाई।..

अमित कुमार विश्वास, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ।